CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT-2

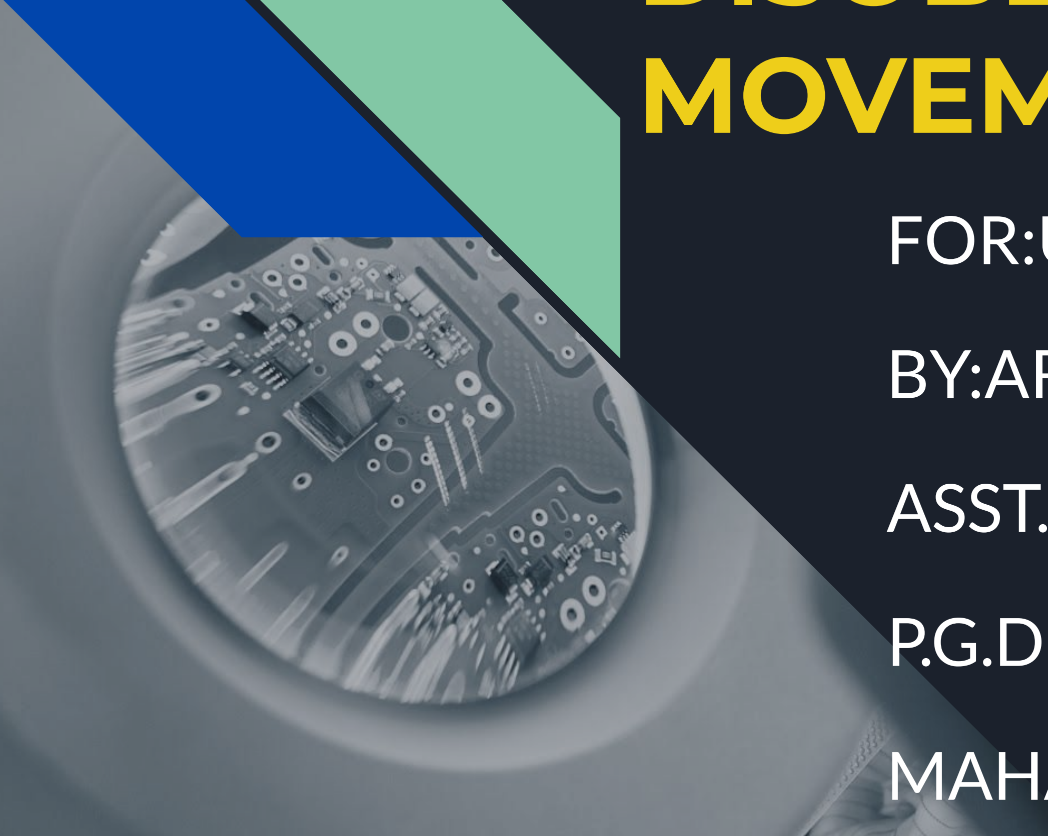

FOR:U.G.PART-3,PAPER-6

BY:ARUN KUMAR RAI

ASST.PROFESSOR

P.G.DEPT.OF HISTORY

MAHARAJA COLLEGEA,ARA.

आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के साधन

- जनभागीदारी को बढ़ाने के लिए गांवों और कस्बों में प्रभात फेरी आयोजित की जाती थी जिसमें औरतों एवं बच्चे प्रातः कालीन झुंड बनाकर राष्ट्रीय गान गाते हुए गली गली घूमते थे।
- गांव तक राष्ट्रीय संदेश पहुंचाने के लिए जादुई लालटेन काम में लाई जाती थी। बच्चों की **वानर सेना** गठित की गई और बच्चियों की **मंजरी सेना** बनाई गई।

आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के साधन

- पहले की तरह ही कार्यकर्ताओं और नेताओं की लगातार दौरे ,छोटी-बड़ी जनसभाएं आंदोलन का केंद्रीय आधार बनी रही।

असहयोग तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन में अंतर

- असहयोग आंदोलन स्वराज के मुद्दे पर छेड़ा गया था तो सविनय अवज्ञा आंदोलन **पूर्ण स्वराज** के मुद्दे पर
- असहयोग आंदोलन का उद्देश्य सरकार के साथ सहयोग ना करके सरकारी कार्यवाही में बाधा उपस्थित करना था तो वही सविनय अवज्ञा आंदोलन का उद्देश्य कुछ विशिष्ट कानूनों का उल्लंघन करके सरकारी कार्यवाही में बाधा डालना

आंदोलन का सामाजिक आधार

1. औद्योगिक घरानों का विशाल समर्थन सविनय अवज्ञा आंदोलन को मिला। यह समर्थन असहयोग आंदोलन के दौरान नहीं था।
2. बड़े पैमाने पर स्त्रियों की भागीदारी इस आंदोलन में हुई ।स्त्रियों ने धरनों,जुलूसों एवं बहिष्कार कार्यक्रम में शामिल होकर आंदोलन के सामाजिक आधार को व्यापक बनाया।

आंदोलन का सामाजिक आधार

3. मजदूरों की भागीदारी रही किंतु पहले जैसी सक्रियता नहीं रही।

4. आंदोलन में किसानों की भी भागीदारी रही।

5. मुसलमानों की भागीदारी असहयोग आंदोलन की तुलना में नगण्य थी। पश्चिमोत्तर प्रांत में मुसलमानों की भागीदारी जबरदस्त थी।

आंदोलन का पतन

- आंदोलन के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए वायसराय इरविन ने गोलमेज सम्मेलन का प्रस्ताव रखा। नवंबर 1930 से जनवरी 1931 के बीच लंदन में **प्रथम गोलमेज सम्मेलन** हुआ |कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया फलत:सम्मेलन महत्वहीन हो गया | गांधी जी को जेल से रिहा कर वायसराय से बातचीत का अवसर दिया गया।

गांधी इरविन समझौता

5 मार्च *1931* को **गांधी इरविन** समझौता हुआ जिसमें सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित कर गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने की बात की गई। इस समझौते की लिखित मुख्य विशेषताएं थी:

1. कांग्रेस की ओर से गांधी जी सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने के लिए सहमत हो गए

गांधी इरविन समझौता

2 .कांग्रेस संवैधानिक सुधारों का प्रारूप तैयार करने के लिए इस शर्त पर द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिए सहमत हुआ कि प्रस्तावित संवैधानिक सुधारों का आधार (क)संघीय व्यवस्था (ख)उत्तरदायित्व पूर्ण शासन और (ग)भारत के हित को देखते हुए प्रतिरक्षा ,विदेशी मामलों ,अल्पसंख्यकों से संबंधित मामलों और भारत के वित्तीय ऋण जैसे विषयों के संबंध में सुरक्षात्मक व्यवस्था प्रदान करना होगा।

गांधी इरविन समझौता

3. वायसराय सविनय अवज्ञा आंदोलन के संबंध में लागू किए गए अध्यादेशों को वापस लेने के लिए सहमत हो गए

4. सरकार आंदोलन के संबंध में गिरफ्तार किए गए आंदोलनकारियों को रिहा करने तथा आंदोलन के कारण जब्त की गई संपत्तियाँ को वापस करने के लिए सहमत हो गई।

गांधी इरविन समझौता

5 .सरकार समुद्र तट के कुछ दूरी के भीतर रहने वाले लोगों को निःशुल्क समुद्री नमक लेने या बनाने की अनुमति देने के लिए सहमत हो गयी।

6. सरकार शराब की दुकानों पर शांतिपूर्ण धरना देने की अनुमति के लिए राजी हो गई।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने भाग लिया किंतु वहां निराशा ही हाथ लगी क्योंकि सरकार ने सांप्रदायिक तत्वों को प्रोत्साहन दिया । दूसरी तरफ भारत में नए वायसराय ***वेलिंगटन*** ने कठोर दमन चलाया। गांधी जी ने वेलिंग्टन से बात करने का प्रयास किया किंतु बात न हो सकी अतः1 जनवरी 1932 को पुनःसविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ दिया गया।

आंदोलन का दूसरा चरण(1932-1934)

आंदोलन के दूसरे चरण में सरकार ने प्रतिक्रिया स्वरूप कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया |गांधीजी सहित सभी बड़े नेता जिनमें जवाहरलाल नेहरू, खान अब्दुल गफ्फार खाँआदि शामिल थे को गिरफ्तार कर लिया गया। आंदोलन में भाग लेने के कारण करीब 90000 पुरूषों, महिलाओं तथा बच्चों को गिरफ्तार किया गया।

आंदोलन का दूसरा चरण

सांप्रदायिक अवार्ड और गांधीजी के आमरण अनशन की पृष्ठभूमि में सविनय अवज्ञा आंदोलन की गति मंद पड़ गई। पूना समझौते के उपरांत महात्मा गांधी की रुचि इस आंदोलन में नहीं रही और अब वह पूरी तरह अस्पृश्यता- विरोधी आंदोलन में रुचि लेने लगे। लोगों में भी आंदोलन के प्रति उत्साह में कमी देखकर गांधी जी ने अप्रैल 1934 में इसे स्थगित कर दिया।

आंदोलन की कमियाँ

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम एकता का अभाव दिखा।
2. इस आंदोलन में बुद्धिजीवियों की वह भागीदारी नहीं देखी जा सकी जो असहयोग आंदोलन में देखी गई।

आंदोलन का प्रभाव

1. इस आंदोलन का दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा। साम्राज्यवादी नीतियों को भारतीयों ने अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध माना और देश की आजादी के लिए लोगों ने बढ़ चढ़कर जेल यात्रा में हिस्सा लिया।
2. इस आंदोलन में नारी मुक्ति के आदर्श को आगे बढ़ाया। इसमें महिलाओं की अच्छी भागीदारी रही

आंदोलन का प्रभाव

3. इस आंदोलन में कृषक वर्ग की अभूतपूर्व भागीदारी रही।

4. संगठन के स्तर पर कांग्रेस पहले से ज्यादा सुदृढ़ हुआ।

5. सविनय अवज्ञा आंदोलन में स्वयंसेवकों की भागीदारी ज्यादा कठिन थी ।उन्होंने इस में बढ़

सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रभाव

6. ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।ब्रिटेन से आयातित कपड़ों की मात्रा गिरकर एक -तिहाई रह गई थी।

7. कांग्रेस भारी राजनीतिक समर्थन प्राप्त कर सकी जो 1937 के चुनाव में भारी विजय के रूप में देखा जा सकता है।